COMBINED ISSUE

ISSN: 2229-5771

SAMĀNUBHŪTI

INTERNATIONAL PEER-REVIEWED RESEARCH JOURNAL

VOLUME: VII NUMBER: XII & XIII, BI-ANNUAL: JAN-JUNE & JULY-DEC, 2016.

JAGADGURU RAMBHADRACHARYA HANDICAPPED UNIVERSITY
CHITRAKOOT, UTTAR PRADESH-210204

PHONE: 05198-224481, FAX: 05198-224293, WEB: WWW.JRHU.COM

ABOUT THE CHANCELLOR

Padamvibhushan Jagadguru Rambhadracharya Ji, the life-long chancellor of Jagadguru Rambhadracharya Handicapped University, Chitrakoot, U.P (India), was born in 1950 at Jaunpur, Uttar Pradesh, India. Swami Ji completed his Bachelor & Master Degree in Sanskrit from Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, U.P (India). He was awarded Ph.D. for his illustrious work on Panini, a great grammarian of Sanskrit Language. He travelled widely across the nations to propagate Indian Culture and religion. He visited USA, Canada, England, Singapore, Mauritius, Indonesia, Fizi, Guyana etc. He was invited to speak in World Peace Summit at UNO. New York in the year 2000, Brilliant writer, author, extempore orator, composer and authority on Sanskrit Panini Grammar, Swami Ji's landmark contributions in the field of literature were recognized by Sahitya Academy Award of 2005 for his Mahakavya Bhargav Raghveeyam composed in Sanskrit language. He has also received President Award, Maharshi Badrayan Purushkar of the year 2004.

COMBINED ISSUE

ISSN: 2229-5771

SAMĀNUBHŪTI

INTERNATIONAL PEER-REVIEWED RESEARCH JOURNAL

VOLUME: VII NUMBER: XII & XIII, BI-ANNUAL: JAN-JUNE & JULY-DEC, 2016.

JAGADGURU RAMBHADRACHARYA HANDICAPPED UNIVERSITY
CHITRAKOOT, UTTAR PRADESH-210204

PHONE: 05198-224481, FAX: 05198-224293, WEB: WWW.JRHU.COM

Editorial Advisory Board

Patron : Prof. Yogesh Chandra Dubey

Advisory Board:

1. Prof. S.R.Singh Sengar
2. Prof. O.P. Dwivedi

Chief Editor

Prof. Kamta Prasad Tripathi

Managing Editor:

Prof. Girija Prasad Dubey

Editor:

Dr. Mahendra kumar Upadhyay

Co-Editor

1. Sri Nihar Ranjan Mishra
2. Dr. Vinod kumar Mishra

Asst. Editor

Dr. Sanjay Kumar Nayak

Editorial Board

1. Dr. Arun kumar Shukla
2. Dr. Rakesh kumar Tiwari
3. Dr. Sunita Srivastava
4. Sri Vishwesh Dubey
5. Km. Amita Mishra
6. Dr. Pratima kumari Shukla
7. Sri Ramji Verma
8. Dr. Shashi Kant Tripathi
9. Dr. Pramila Mishra
10. Sri Kumar Prodyot dubey
11. Dr. Pawan Kumar Tripathi

Editorial Office:

Research Publication Unit, J.R.H. University, Chitrakoot,
Uttar Pradesh-210204, India
www.jrhu.com, email: samanubhutijrhu@gmail.com

Views expressed in the research paper/article/book review are individual's opinion of the concerned author only.

dqyifr lans'k

परिष्कार एवं परिमार्जन के द्वारा मूलभूत ज्ञान के स्वरूप को अनुप्रयोग की प्रक्रिया से जोड़कर, ज्ञान को जनसामान्य के लिये सार्वभौमिक रूप से प्रकट करना, अनुसंधान का लक्ष्य है। अनुसंधान की दिषा व प्रतिमान समय सापेक्ष इस प्रकार निर्मित हो कि उनमें अनुसंधित्सु व बौद्धिक संवर्ग के व्यक्ति सुगमता से कार्य कर समकालीन समस्याओं को हल करके मानवीय आवष्यकता की प्रतिपूर्ति का साधन बन सके। यह प्रक्रिया आधुनिकता के साथ–साथ नवाचार का भी महत्वपूर्ण कारक सिद्ध होगी। वर्तमान में यही प्रतिबिम्ब दृष्टिगोचर भी हो रहा है– ज्ञान आधारित गवेषणाओं के प्रत्येक मंच पर, इस तथ्य पर बल दिया जा रहा है कि उच्च षिक्षा के सृजन केन्द्र अर्थात विष्वविद्यालय, सीधे समाज के व्यक्तियों तक परिष्कृत ज्ञान को पहुँचाकर उनके जीवन उन्नयन का साधन बनें।

अनुसंधान एवं ज्ञान के प्रसार के इसी समकालीन उद्देष्य की पूर्ति हेतु समाज के विषिष्ट आवष्यकता वाले वर्ग अर्थात् दिव्यांगों के लिये समर्पित है–जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विष्वविद्यालय। विष्वविद्यालय दिव्यांगों की उच्च षिक्षा एवं उनके संपूर्ण जीवन लक्ष्य के मार्गदर्षन की दिषा में अपने स्थापना काल से ही द्रुत गति से अग्रसर है। विष्वविद्यालय की प्रगति व विषिष्ट लक्ष्य से अभिप्रेरित होकर विगत 06 सितम्बर 2016 को देष के मानव संसाधन विकास मंत्री ने अपने कार्यकाल के प्रथम दीक्षान्त समारोह का मुख्य आतिथ्य स्वीकार कर इसे केन्द्रीय विष्वविद्यालय के रूप में विकसित करने की दिषा में ठोस पहल की है। यह इस दिषा की ओर शुभ संकेत है कि विष्वविद्यालय शीघ्र ही दिव्यांगों की उच्च षिक्षा व अनुसंधान के सर्वोत्कृष्ट केन्द्र के रूप में निकट भविष्य में जाना जायेगा। इसी आषा–विष्वास एवं सद्भावना के साथ मैं विष्वविद्यालय में हो रहे सतत अनुसंधान कार्यों की मौलिक अभिव्यक्ति हेतु नियमित प्रकाषित अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, ''समानुभूति'' के नवीन अंक के प्रकाषन की बेला में अपनी मंगलानुषंसा व्यक्त करता हूँ।

iks0 ;ksxs'k pUn nqcs
dqyifr

lekuHkkfr%

vudo.k’kk/ki.ki"Ik lkjHkkfUork]
leh{kdkfyoUne t x tukfHkufUnrkA
euhUnekU ; jkeHknnf’kdkudEi ;k]
lekuHkkfr#Rlo ruk r ’ke"kh t "kkeAA

विविध वर्णी

षोधपत्र–रूपी

पुष्पों के

सौरभ से

समन्वित

समीक्षकरूपी मधुपवृन्द

के गुंजन से

अभिनन्दित

मुनीन्दवृन्द–वन्द्य

जगद्गुरु श्रीरामभद्राचार्य की

अनुकम्पा से

यह (अन्ताराष्ट्रिय) समानुभूति षोधपत्रिका

मनीषिवृन्द के

आनन्दोत्सव

का

विस्तार करे।

CONTENTS

Sr.No	Topic	Author	Page No.
1	संस्कृत का वैष्विक स्वरूप	प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र	1-6
2	योगिक क्रियाओं के द्वारा मधुमेह रोग पर विजय	डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार शर्मा	7-11
3	लक्ष्य से भटकी शिक्षा पद्धति	प्रो0 षिवराज सिंह सेंगर	12-14
4	भारतीय राजनीतिक चिंतन में भावी आदर्श समाज का एक प्रतिमान	डॉ0 नीलम चौरे	15-19
5	प्रकृति हमें देती है सब कुछ....	डॉ0 प्रज्ञा मिश्रा	20-23
6	भारत में समाजवाद की प्रासंगिकता	डॉ0 अजय आर0 चौरे	24-33
7	समकालीन हिन्दी साहित्यः और स्त्री विमर्ष	डॉ किरण त्रिपाठी	34-36
8	वैदिक वाङ्मय में सामाजिक, राजनैतिक कल्याण की अवधारणा	डॉ0 प्रतिमा कुमारी शुक्ला	37-40
9	परम्परागत जल स्रोतों के प्रति सामुदायिक उदासीनता और बढ़ता जल संकट	डॉ0 राजेष कुमार पाल	41-43
10	नवीन वैधानिक एवं शैक्षिक नीतियों का बाल–श्रमिकों की शिक्षा पर प्रभाव	पवन कुमार दुबे	44-47
11	संगीत और मनोविज्ञान में अन्तर्सम्बन्ध	डॉ0 ज्योति विष्वकर्मा	48-49
12	उपलब्धि अभिप्रेरणा के सन्दर्भ में हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन	कु0 अमिता मिश्रा	50-52
13	सदाचार के अधिष्ठाता– श्रीराम	डॉ0 प्रमिला मिश्रा	53-56
14	नक्सलवाद और उसके उद्भव के कारण	डॉ0 विनोद षंकर सिंह एवं अत्रिमुनी त्रिपाठी	57-59
15	आदिवासी उपन्यास लेखन परम्परा एवं संजीव के उपन्यासों में आदिवासी चिंतन	डॉ. कुसुम सिंह एवं श्रद्धा त्रिपाठी	60-69
16	पुनर्नवा में ऐतिहासिकता एवं स्त्री–चेतना	डॉ. ललित कुमार सिंह एवं दीपशिखा	70-73
17	ग्रामीण महिला सशक्तिकरण : एक तस्वीर	डॉ. राजेश त्रिपाठी एवं वन्दना कुशवाहा	74-77
18	विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि में सूचना एवं संचरण तकनीकी की उपयोगिता	डॉ0 वाई0के0 सिंह एवं पूजा द्विवेदी	78-81
19	प्राचीन नीति ग्रन्थों में दण्डनीति की विवेचना	डॉ0 रविष कुमार तिवारी	82-89
20	माध्यमिक शिक्षा के गुणात्मक विकास में सूचना संचरण तकनीकी की आवश्यकता और महत्त्व	डॉ. आशा शर्मा एवं विकाश कुमार त्रिपाठी	90-95

21	निराला साहित्य एवं वैश्विक शान्ति	डॉ0 शान्त कुमार चतुर्वेदी एवं पीयूष कुमार द्विवेदी	96-98
22	बी0एड0 कक्षा के विद्यार्थियों की रुचि पर उनकी महाविद्यालयी नवीन पाठ्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन	श्रीमती कीर्तिबाला वर्मा	99-103
23	पंचायतीराज व्यवस्था एवं ग्रामीण विकास	विजय शंकर मिश्र	104-108
24	द्वन्द्वात्मक क्रीड़ाओं में योग का महत्व	अंशुमान पाठक	109-111
25	सामाजिक उत्थान में सहायक : भारतीय संगीत	रामराज पाण्डेय	112-114
26	निःशक्तताः सतना जिले के संदर्भ मे एक नजर	डॉ॰जनक बहादुर चौबे	115-119
27	वाल्मीकि रामायण एवं सीताचरितम् का तुलनात्मक अध्ययन	सुषील कुमार तिवारी	120-122
28	चन्देलकालीन ब्राह्मणों की सामाजिक स्थितिः एक समीक्षात्मक अध्ययन (बुन्देलखण्ड के परिप्रेक्ष्य में)	महेन्द्र त्रिपाठी	123-126
29	बौद्ध शिक्षा को आधुनिक भारतीय शिक्षा में योगदान	डॉ0 सरोज गुप्ता एवं श्रीमती बन्दना सिंह	127-130
30	Whitman's Song of Myself: An Interpretation in the Light of Yogic Samadhi	Dr. Shashi Kant Tripathi	131-135
31	A study of awareness of pupil teachers towards the legal provisions for differently abled persons	Dharmendra Kumar Upadhyay	136-140
32	Meena Kandasamy's Touch: A Thematic Study in Suppression	Dr. Siddhartha Sharma	141-145
33	Yogic Diet in Health And Hygine	Dr. Jitendra Sharma	146-150
34	A study of Impact of school Environment on the personality of the students of rural and urban higher secondary schools	Kumar Prashant Singh Sengar	151-155
35	Naxalite problem and tribal development in district Dantewada	Dr. Pawan Kumar Tripathi	156-159
36	An Error Free packet Transmission Technique In MANET	Kumar Pradyot Dubey	160-164
37	Vehicle Tracking System Using GPS	Mr. Jay Prakash Pandey	165-168
38	Factors Influencing Purchase of FMCG by Rural Consumers in ChitrakootDham District: An Empirical Study	Dr. N.L. Mishra & Pradeep Kumar Mishra	169-181
39	Corporate social responsibility: An Analysis Impact and challenges in Indian Business world	Prof. R.C. Singh & Purushottam Singh	182-189

lEikndh;

m"ko e tgkfluh txRrekfoukf'kuh
leRojf'edkf'kuh eu";rkfodkfluh
lfjr le xf'kfYiuho flf)nk ;'kfLouh
lekuHkfr:ftirk pdkLr fo'oHkr;

अत्यन्त आह्लाद का विषय है कि जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विष्वविद्यालय चित्रकूट की अन्ताराष्ट्रिय अर्द्धवार्षिक षोधपत्रिका समानुभूति का सप्तवर्षीय द्वादष एवं त्रयोदष संयुक्तांक प्रकाषित होकर अपनी प्रज्ञान–रष्मियाँ दिग्–दिगन्त में बिखेरने के लिए लालायित है।

विष्व के अप्रतिम मनीषी धर्मचक्रवर्ती, यषभारती, पद्मविभूषण एवं विद्यावाचस्पति आदि अनेक गौरवास्पद सम्मानो से मण्डित महाकवि महनीय मनस्वी अपूर्व तपस्वी परम यषस्वी निसर्ग सिद्ध महाकवि विष्ववन्द्य जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य श्री रामभद्राचार्य जी के विकलांगजनो के प्रति सहज एवम् परिणाममूलक अनुराग तथा निष्कम्प सत्संकल्प से चित्रकूट की पावन वसुन्धरा पर विष्व का प्रथम विकलांग विष्वविद्यालय 26 जुलाई 2001 की पुण्यवेला में अभ्युदित हुआ। सौभाग्यतः मनीषि–मूर्धन्य महात्मा स्वामी रामभद्राचार्य जी ही इस विष्वविद्यालय के विधिसम्मत जीवनपर्यन्त कुलाधिपति हैं। उनकी निर्व्याज अनुकम्पा एवम् अचिन्त्य अध्यवसाय से ही सम्प्रति यह षोडषवर्षकल्प विष्वविद्यालय अपने कल्पनातीत विकास से सुखद आष्चर्य की सृष्टि कर रहा है।

भारतीय संस्कृति की सर्वसौख्यदा चिरन्तनी चिन्तनधारा के अनुरूप मानवता के पल्लवन में उच्चषिक्षा प्राप्त सर्वथा सुयोग्य विकलांगजनो की गरिमामायी सहभागिता हो, मूलतः यही इस विष्वविद्यालय का लक्ष्य है। दिव्यांगो के अन्तर्निहित दिव्य गुणों के समुचित विकास हेतु इस पावन संस्थान में समस्त समीहित सुविधाएं एवम् आधुनिक यन्त्रादि विद्यमान है। इस विष्वविद्यालय के उद्देष्यों की अनुगामिनी यह षोधपत्रिका समानभूति भी है।

जगद्गुरुदेव को विकलांगो में परमेष्वर की स्पष्ट छवि दिखाई पडती है। उनका विचार है कि विकलांगो के प्रति सहानुभूति नही अपितु समानुभूति अपेक्षित है। सकलांगो की समानुभूति तब सफल मानी जाएगी जब विकलांगो में दैन्यभाव के निराकरण के साथ ही समानुभूति की भावना दृढ होगी। इन्हीं विचारो को दृष्टि में रख कर गुरुदेव ने विकलांग विष्वविद्यालय की षोधपत्रिका को समानुभूति की अभिधा से मण्डित किया है।

वस्तुतः विष्वविद्यालय भूतल के कल्पतरु हैं जिनमें ज्ञान–विज्ञान की अनन्त षाखाएं पल्लवित एवं पुष्पित होकर अभीष्ट फल प्रदान करती हैं। विष्वविद्यालय के अनुष्ठेय कृत्यों में उच्चषिक्षा के साथ उत्कृष्ट अनुसन्धान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अनुसन्धान की महत्ता सर्वविदित है। अद्यतन आष्चर्यचकित कर देने वाला वैज्ञानिक चमत्कार सतत अनुसन्धान का ही परिणाम है। षोध से ही नवीन बोध की उपलब्धि होती है। ग्राह्य एवं त्याज्य, कार्य एवम् अकार्य तथा सत् एवम् असत् आदि के निर्धारण में प्रमाणपरिपुष्ट षोध की गौरवमयी भूमिका होती है। सम्प्रति भौतिक दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध अद्यतन विष्वमानव नितान्त अषान्त एवं भयाक्रान्त क्यों हैं? यह भी अनुसन्धेय है।

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः की उदात्त भावना के साथ वसुधैव कुटुम्बकम् की वास्तविकता को दृढता प्रदान करके 'चरैवेति–चरैवेति' इस मन्त्र के मर्म को आत्मसात् करते हुए 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की मंगलमयी संकल्पना को साकार करने के लिए आधुनिक विज्ञान का समुचित सहयोग आवष्यक है– इस दृष्टि से भी चिन्तन, अध्यवसाय एवं षोध को आगे बढाना लाभप्रद होगा। 'समानुभूति' पूर्वोपन्यस्त समस्त उदात्त विचारों की पृष्ठभूमि पर मानवता के पल्लवन हेतु कृतसंकल्प है।

ज्ञान–विज्ञान का आकाष अनन्त है। आज विषिष्ट ज्ञान की दृष्टिसापेक्ष होने वाली अद्भुत उपलब्धि के पष्चात् भी बहुत कुछ जानना अवषिष्ट है। अतः निरन्तर अनुसन्धान एवम् उसके प्रचार–प्रसार हेतु षोधपत्रिकाओं के प्रकाषन की उपादेयता सदैव बनी रहेगी। मूलतः विकलांगजनो को समुचित षिक्षा प्रदान

करके राष्ट्र एवं विष्व की समानधारा से जोड़ना सामयिक आवष्यकता है। उपरिचर्चित महनीय उद्देष्यो के साथ ही समष्टिहित में विमर्षषील मनीषियो के चिन्तन को वांछित विस्तार मिले यह इस समानुभूति षोधपत्रिका का मूल लक्ष्य है।

प्रस्तुत अंक में कुल उन्तालिस षोध लेखों का संकलन किया गया है। भाषा की दृष्टि से यह पत्रिका त्रिवेणी है जिसमें संस्कृत, हिन्दी और आंग्ल भाषा के लेखों का संग्रह होता है। जिन मनीषी लेखकों ने अपना योगदान दिया है उनका संक्षिप्त विवेचन दिया जा रहा है।

प्रथमतः विष्वविश्रुत मान्य मनीषी एवं यषस्वी महाकवि प्रोफेसर अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने **lLd`r dk of'od Lo:lk** नामक शोध लेख में वैदिक युग से उन्नीसवीं शतीं ई0 तक संस्कृत के विश्वव्यापी स्वरूप को सप्रमाण प्रस्तुत किया है। बाल गंगाधर तिलक के बसन्त–सम्पात–सिद्वान्त में प्रतिपादित अदितियुग को वेदारंभ का आधारकाल मानकर ,संस्कृत को समानान्तर माध्यम भाषा के रूप वृहद् विश्लेषण, सुधी पाठकों के लिये पात्रेय सिद्व होगा। प्रमाणों से भरपूर अप्रतिम व अनूठा शोध न मात्र शोधार्थियों को अपितु शोध–निदेशकों व अन्यान्य शोध प्रतिष्ठानों को भी सुव्यवस्थित विषयवस्तु व प्रस्तुति का प्रारूप प्रदान करना।

डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा लिखित शोध–लेख **;kSfxd fØ;kvksa }kjk e/kqesg jksx ij fo t ;** में योगिक क्रियाओं के माध्यम से मधुमेह रोग के निदान का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जल–नीति से लेकर उडिडयान बंध तक एवं प्राकृतिक चिकित्सा से लेकर पथ्यापथ्य तक विश्लेषणात्मक परामर्श पाठकों के लिये ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होगा।

प्रसिद्व शिक्षाविद् प्रो0 शिवराज सिंह सेंगर ने **y{; lq HkVdh f'k{kk i}fr** नामक लेख में शिक्षा के परिवर्तित स्वरूप को समय व समाज में हुये परिवर्तन से जोडकर देखा है, साथ ही समय व देश के अनुकूल प्रभावी शिक्षा पद्वति की स्थापना की संस्तुति की है। प्रो0 सेंगर का यह प्रयास शिक्षा–नीति निर्माताओं व शैक्षणिक प्रतिष्ठानों हेतु कसौटी के रूप में द्रष्टव्य होगा।

डॉ0 नीलम चौरे द्वारा प्रस्तुत लेख **Hkkjrh; jktuhfrd fpUru esa Hkkoh vkn'kZ lekt dk ,d ifreku** में गांधी जी के विभिन्न प्रयोगवादी सिद्वान्तों से लेकर सर्वोदयी समाज की कल्पनाओं के आधार पर व्यवहारिक राजनीतिक सोच व समझ की सार्थकता को निरूपित किया गया है।

डॉ0 प्रज्ञा मिश्रा ने अपने शोध लेख **izd`fr gesa nsrh gS lc dqN** में प्रकृति के सहज उदात्त व उदार गुणों का विश्लेषण कर, मानव के शास्वत संबंधो को स्थापित करने का विस्तृत प्रयास किया है।

डॉ0 अजय आर0 चौरे ने **Hkkjr esa lektokn dh izklafxdrk** लेख में समाजवाद का सांगोपांग विवेचन कर इसके उदय, उत्कर्ष एवं अस्तोन्भाव अवस्थाओं को दर्शाया है।

डॉ0 किरण त्रिपाठी ने **ledkyhu fgUnh lkfgR;% vkSj L=h foe'kZ** में युगानुरूप परिवर्तन के समानान्तर स्त्री–विमर्श को साहित्य में नवीन जीवन–दृष्टि की समावेशी विवेचना की है।

डॉ0 प्रतिमा कुमारी शुक्ला ने अपने लेख **oSfnd okM~e; esa lkekftd] jktuSfrd dY;k.k dh vo/kkj.kk** के माध्यम से भारतीय धर्म व दर्शन की विशेषताओं का विवेचन किया है।

डॉ0 राजेश कुमार पाल ने अपने लेख **ijEijkxr ty lkzrksa ds izfr lkeqnkf;d mnklhurk vkSj c<rk ty ladV** में जल संरक्षण के प्रति ध्यान आकृष्ट किया है।

श्री पवन कुमार दुबे ने बाल–श्रमिकों की शिक्षा–समस्या का सविस्तार से अध्ययन अपने लेख **uohu o/kkfud ,oa 'kSf{kd uhfr;ksa dk cky&Jfedksa dh f'k{kk ij izHkko** में किया है।

डॉ0 ज्योति विश्वकर्मा ने संगीत से मनोविज्ञान के शास्वत सम्बन्ध को अपने शोध–लेख **laxhr vkSj euksfoKku esa vUrlZEcU/k** में विश्लेषित किया है।

कु0 अमिता मिश्रा ने **miyfC/k vfHkizj.kk ds lUnHkZ esa fgUnh o vaxzsth ek/;e ds fo|kfFkZ;ksa dh vf/kxe 'kSfy;ksa dk rqyukRed v/;;u** में विभिन्न उपलब्ध आंकडों के आधार पर विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों की विवेचना की है।

डॉ0 प्रमिला मिश्रा ने श्री राम का आदर्श आचार के अधिष्ठाता के रूप में अपने लेख **lnkpkj ds vf/k"Bkrk& Jh jke** में स्थापित किया है।

डॉ0 विनोद शंकर सिंह व श्री अत्रिमुनी त्रिपाठी ने अपने संयुक्त लेख **uDlyokn vkSj mlds mnHko dk dkj.k** में ज्वलन्त घरेलू आतंक को समग्र रूप से प्रस्तुत किया है।

डॉ0 कुसुम सिंह व श्रद्वा त्रिपाठी ने संयुक्त लेख **vkfnoklh miU;kl ys[ku ijEijk ,oa lathoo dk miU;klks esa vkfnoklh fparu** में साहित्य की मूलधारा को मूर्त–स्वरूप प्रदान किया है।

वहीं दूसरी ओर **iquuZok esa ,frgkfldrk ,oa L=h&prsuk** नामक संयुक्त लेख में डॉ0 ललित कुमार सिंह व दीपशिखा ने हिन्दी साहित्याकाार के देदीप्यमान नक्षत्र हजारी प्रसाद जी के योगदान का विवेचन किया है।

डॉ0 राजेश त्रिपाठी एवं बन्दना कुशवाहा ने संयुक्त रूप से महिला सशक्तिकरण की ग्रामीण झाँकी अपने लेख **xzkeh.k efgyk l'kfDrdj.k % ,d rLohj** में प्रस्तुत किया है।

डॉ0 वाई0 के सिंह एवं पूजा द्विवेदी द्वारा सूचना तकनीकी की विद्यार्थियों हेतु उपयोगिता का विश्लेषण **fo|kfFkZ;ksa dh 'kSf{kd vfHk:fp esa lwpuk ,oa lapkj.k rduhdh dh mi;ksfxrk** नामक लेख किया गया है।

डॉ0 रविश कुमार तिवारी ने अपने लेख **ikphu uhfr xzUFkksa esa n.Muhfr dh foospuk** में शास्त्रमत–लोकमत के अनुसार दण्ड प्रक्रिया का विशद् विवेचन किया है।

डॉ0 आशा शर्मा व विकाश कुमार त्रिपाठी ने शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु संचार तकनीकी की सुचारू व्यवस्था की अनिवार्यता **ek/;fed f'k{kk dh xq.kkRed fodkl esa lwpuk lapkj.k rduhdh dh vko';drk vkSj egRo uked** लेख में व्यक्त की है।

डॉ0 शांत कुमार चतुर्वेदी व पीयूष कुमार द्विवेदी ने **fujkyk lkfgR; ,oa oSf'od 'kkfr** में छायावाद के चर्तुस्तम्भों में एक सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी के साहित्य सृजन की प्रासंगिकता का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है।

श्रीमती कीर्तिबाला वर्मा **ch0,M0 d{kk dk fo|kfFkZ;ksa dh :fp ij mudh egkfo|ky;h uohu ikB~;Øe dk iHkko dk v/;;u** लेख में विद्यार्थी और अभिरूचि में सहज सम्बन्ध प्रस्तुत किया है।

विजय शंकर मिश्र ने पंचायती राज प्रणाली की समीचीनता का विवेचन **ipk;rh jkt 0;oLFkk ,oa xzkeh.k fodkl** में किया है।

अंशुमान पाठक ने अपने शोध लेख **}U}kRe ØhMkvksa esa ;ksx dk egRo** में द्वन्द्वात्मक खेलों के माध्यम से योग–प्राणायाम को जोड़ने का प्रयास किया है।

रामराज पाण्डेय ने भारतीय संगीत को उस ऊँचाई तक देखने का प्रयास किया है जहाँ से व्यक्तिनिष्ठ व समाजनिष्ठ समृद्धि मिलती है।

डॉ0 जनक बहादुर चौबे ने सतना जिले के निःशक्त लोगों का अध्ययन प्रस्तुत किया है।

सुशील कुमार तिवारी ने वाल्मीकि रामायण एवं सीताचरितम् का तुलनात्मक विवेचन का प्रयास किया है।

महेन्द्र त्रिपाठी ने बुन्देलखण्ड क्षेत्र के चन्देलकालीन ब्राह्मणों की सामाजिक स्थिति को विवेचित किया है।

डॉ0 सरोज गुप्ता एवं श्रीमती बन्दना सिंह ने संयुक्त प्रयास के माध्यम से बौद्व शिक्षा की प्रासंगिकता का विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

आंग्ल भाषा के शोध लेखों में जिन शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने पत्रिका को बहुआयामी बनाने में योगदान दिया है उनका संक्षिप्त विहंगावलोकन इस प्रकार है–

डॉ0 शशिकांत त्रिपाठी ने अपने शोध लेख **Whitman's Song of Myself: An Interpretation in the Light of Yogic Samadhi** में अमेरिका के वाल्ट व्हिटमैन की कविता का विश्लेषण योगियों की समाधि के

चार स्तरों पर किया है। यह कार्य भारतीय पाठकों को नवीन समझ प्रदान करेगा एवं अमेरिका–भारत के सहज आध्यात्मिक सम्बन्धों को जोड़ने में सहायक सिद्व होगा।

धर्मेन्द्र कुमार उपाध्याय ने **A study of awareness of pupil teachers towards the legal provisions for differently abled persons** में दिव्यांगो के लिये प्रदत्त विभिन्न वैधानिक व्यवस्थाओं से संबंधित अध्यापक– छात्र जागरूकता का अध्ययन प्रस्तुत किया है।

डॉ0 सिद्वार्थ शर्मा ने मीना कण्डासामी के दलित साहित्य 'टच' का विश्लेषण अपने लेख **Meena Kandasamy's Touch: A Thematic Study in Suppression** में किया है।

डॉ0 जितेन्द्र शर्मा ने योगिक आहार और स्वास्थ्य संवर्द्वन का विस्तृत विवरण अपने लेख **Yogic Diet in Health And Hygine** में देने का प्रयास किया है।

कुमार प्रषांत सिंह सेंगर ने विद्यालयीन पर्यावरण व ग्रामीण तथा षहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का तुलनात्मक अध्ययन **A study of Impact of school Environment on the personality of the students of rural and urban higher secondary schools** में दिया है।

डॉ0 पवन कुमार त्रिपाठी ने छत्तीसगढ़ के दन्तेवाड़ा में नक्सली समस्या **Naxalite problem and tribal development in district Dantewada** में सविस्तार प्रस्तुत किया है।

कुमार प्रद्योत दुबे ने अपने लेख **An Error Free packet Transmission Technique In MANET** में दूरभाष एवं नेटवर्क में प्रयुक्त विभिन्न सुरक्षा समस्याओं का विवेचन किया है।

जय प्रकाष पाण्डेय के लेख **Vehicle Tracking System Using GPS** में वाहनों की स्थिति सुनिष्चित करने एवं सतत् नियंत्रण में जी0पी0एस0 के प्रयोग को सुगम बनाने का प्रयास किया गया है।

प्रदीप कुमार एवं डॉ0 नन्दलाल मिश्रा ने संयुक्त रूप से ग्रामीण उपभोक्ताओं द्वारा क्रय किये गये सामानों पर प्रभावकारी तथ्यों का अध्ययन **Factors Influencing Purchase of FMCG by Rural Consumers in ChitrakootDham District: An Empirical Study** में किया गया है।

उद्योग जगत की सामाजिक दायित्व का अध्ययन पुरूषोत्तम सिंह व डॉ0 आर0 सी0 सिंह द्वारा **Corporate social responsibility: An Analysis Impact and challenges in Indian Business world** में सुव्यवस्थित रूप से द्रष्टव्य है।

अनेक ग्रन्थों में भी जिनके गुणो एवं धार्मिक, सामाजिक एवं साहित्यिक अवदानो को समाहित कर पाना दुष्कर है, ऐसे अपूर्व मेधासम्पन्न महात्मा जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी के चरणाम्बुजो में धन्यवाद स्वरूप नमनांजलि अभ्यर्पित करता हूँ। इस विष्वविद्यालय की परिकल्पना संस्थापना एवं संचालन में जिनकी महीयसी भूमिका रही है– ऐसी माननीया डॉ0 गीता देवी (बुआ जी) के प्रति धन्यवाद के षब्द स्वयं व्यक्त हो उठते है। विष्वविद्यालय के विद्वान् कुलपति, कवि एवं लब्धप्रतिष्ठ समीक्षक जागरूक प्रषासक प्रो0 योगेष चन्द्र दुबे के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। प्रसिद्ध समाजषास्त्री एवं कुषल प्रषासक वि0वि0 के यषस्वी कुलसचिव प्रो0 डॉ0 गिरिजा प्रसाद दुबे, विष्वविद्यालय की आर्थिक स्थिति को दृढ़ता प्रदान करने वाले मनीषी माननीय वित्त अधिकारी श्री रमापति मिश्र, प्रख्यात षिक्षाषास्त्री एवं सुयोग्य प्रषासक प्रो0 डॉ0 षिवराज सिंह सेंगर आदि विष्वविद्यालय के कर्णधारो के प्रति बहुषः धन्यवाद। समानुभूति के सम्पादक डॉ0 महेन्द्र कुमार उपाध्याय, संयुक्त सम्पादक श्री निहार रंजन मिश्र एवं श्री विनोद कुमार मिश्र, सहसम्पादक डॉ0 संजय कुमार नायक तथा सम्पादक मण्डल के सदस्यगण के प्रति भूरिषः धन्यवाद विद्योतित है। पत्रिका के अभीष्ट वर्ण–संयोजन हेतु श्री गौरव श्रीवास्तव के प्रति स्वरित मिश्रित साधुवाद। प्रस्तुत अंक जिन मान्य विमर्षषील लेखकों के आलेख प्रकाषित हैं तथा षोधपत्रिका की निष्पन्नता में जिनका किसी भी रूप में सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सभी आत्मीयजनों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करना मै अपना कर्तव्य समझता हूँ।

SAMĀNUBHŪTI

International Journal Samanubhuti is an official journal of Jagadguru Rambhadracharya Handicapped University, the only university in India catering for the means of education of the persons with disability. The Journal is an international peer-reviewed, provides an excellent academic and professional forum to which the contributors around the world are invited to share their researches, views, book reviews, research articles and last not the least experiences in all the areas of humanities, sciences, IT and business administration for publication. Authors are requested to send their manuscript typed double space in MS- Word 2007 in Times New Roman Fonts for English and Kruti dev 10 Fonts for Hindi to samanubhutijrhu@gmail.com along with two hard copies, should be sent to the Editor, Samanubhuti, J.R.H.University, Chitrakoot, Uttar Pradesh, India-210204.

Guidelines for paper submission

The first page of the paper should include the title of the paper/article/book review, the Name of the **author(s), institutional affiliation, email address(es).**
Title: Times New Roman, 14 pt, centered. **Name of the Author(s):** Times New Roman, 12 pt., centered, below the title. **Author(s) affiliation**, **email address(es):** Times New Roman, 10 pt, italic. **Abstract:** Abstracts should not be more than 300 words summarizing the main argument and finding(s) in the paper Times New Roman, 10 pt **Keywords:** Times New Roman 12 pt., maximum 6 keywords. Paper should be between 2000 to 3000 words in length. The pages of the manuscript should be numbered in consecutive sequence. **Page numbering:** Position right, Times New Roman, 12 pt. All paper must be typed in Microsoft Word 2007 Subtitiles (sub headings) use Time New Roman , 12 pt., bold , left . Main text font Times New Roman, 12 pt should be single spaced and have 1 inch margins both sides. **Tables & Figures:** Number tables/ figures should be consecutively as they appear in the text. Do not split tables/figures across two pages. If there is not enough space at the bottom of a page, continue your text and place the table at the top of the next page. Each table/figure must have a lable (titile) beginning with the table number and describing the contents. **APA style** of referencing should be used.

Subscription Form

‘*SAMANUBHUTI’ is* an international peer reviewed research journal of JRH University’ chitrakoot, U.P India.

Serial No…………………….
Subscription No……………..

Please accept my subscription for the ‘Samanubhuti’ bi-lingual, biannual international peer reviewed research Journal from ………………. to ....
Subscription Rates

Group	India	Outside India
Institutions/Corporates	Rs. 800.00	20 US Dollar
Individuals/Academicians	Rs. 500.00	17 US Dollar
Research Scholars & Retired Teachers	Rs. 400.00	14 US Dollar
Life Membership (For 5 years)		
(a) Individuals	Rs. 4000.00	140 US Dollar
(b) Institution	Rs. 5000.00	170 US Dollar

Name…………………………………………………………......................................
Address………..……………………………
………………………………………………………………………………….
…………………………………………………………………………………..
City/State......…............…………....… Pin Code..……….............…..
Country..……......................... Phone No (Land line)…………………...................…
PhoneNo (Mobile)…………………...................…... Fax..………….............……..
Email..……......................................…………..

I herewith enclose the payment of Rs/US Dollar in favour of finance Officer, J.R.Handicapped University, Chitrakoot, payable at Chitrakoot by damand Draft No………………………..dated………………………………………

Please send the above subscription form carefully filled in and duly singed with demand draft or cash to be deposited in the university counter

in the name of samanubhuti at the given address of university.

Date …………… Signature ………………...............

To

The Editor
“Samanubhuti”
’ International Peer Reviewed Research Journal
J.R. Handicapped University
Chitrakoot -210204 India
Email: samanubhutijrhu@gmail.com

.

ABOUT THE UNIVERSITY

The strength of the Nation lies in its diversified human resource, Jagadguru Swami Rambhadracharya Ji believes that every human being is valued resource and should be provided enriched and valued opportunities so as to build required capacities and skills. **Thus this first University of its kind was established in the year 2001 at Chitrakoot, UP, India by Jagadguru Rambhadracharya Ji, to provide higher education and proper rehabilitation to persons with disabilities.** Though, there are various institutions and organizations to cater some of the needs of disabled persons, but the activities of such institutions/organizations were found to be very limited. Swami Rambhadracharya Ji, who himself is a Visually Chanllenged person, came forward with missionary zeal and opened the gate of opportunities for the disabled youth. The U.P Govt. has appointed him as life-long Chancellor of the University. Prof. Yogesh Chandra Dubey is the present Vice-Chancellor of the University.

The University has given a platform to differently abled for getting education in their desired field at U.G and P.G level like Arts, Social Science, Social Work, Music, Fine Arts, Computer Science, Education, Teacher Education Programmes (B.Ed, B.Ed (Special) - Visual Impairment & Hearing Impairment) M.Ed, M.A in Education, Disability studies, Rehabilitation Science Prosthotics & Orthotics, Audiology and so many job oriented courses. In short span of 16 years the University has transformed the lives of disabled persons and enabled them to share the responsibility of Nation building. Simultaneously, the outreach programmes of the University under the umbrella of Centre for Rehabilitation & Development have benefitted the rural population especially the persons with disabilities. These programmes include awareness, early intervention, health care, Training & Employment and lastly their rehabilitation. Now, more than 1500 persons with disabilities have got placement in various fields.

lekuHkkfrekUuu loHkknfoofttZr%A
i';u cz~ee;a loa l[ka cU/kkr~ iePZ;rsAA

&txnx# Jh jkeHkn~kpk;Z%

सभी प्रकार के भेदों से रहित

समानुभूति से युक्त मनुष्य

(सर्वत्र) सब को ब्रह्ममय

देखता हुआ, सुखपूर्वक

बन्धन से मुक्त हो जाता है।

Kkua J);k iznRra loa] 'kkL=k;KkRi~dk'kr~A
vrks foKjuq"Bs;ks ;Kks·;a fo'oHkkr~;sAA